संपादकीय

यूं तो हर मौसम, हर ऋतु में प्रकृति का अपना विशिष्ट सौंदर्य होता है, लेकिन बसंत ऋतु की बात ही कुछ और है। इन दिनों प्रकृति अपने उदात्त सौंदर्य को नवसृजन के कलेवर में प्रस्तुत करती है। ज्ञान एंव कला का मानव समाज में सदैव महत्व रहा है और यही कारण है कि दुनिया के लगभग सभी देशों में, समुदायों में ज्ञान तथा कला देवी के विविध रूपों और देवताओं की परिकल्पना की गई है। भारत में हम सरस्वती, वाग्देवी, भारती, शारदा के नामों से जानते हैं वही बर्मा (म्यांमार) में यह थुयथुदी, सूरस्सती और तिपिटका मेदा (Tipitaka Medaw), चीन में बियानचाइत्यान (Bianchaitian) जापान में बेंजाइतेन (Benzaiten) और थाइलैंड में सुरसवदी (Surasawadee) के नाम से जानी जाती हैं। जर्मनी में स्नोत्र को ज्ञान और सदाचार की देवी माना गया है, वहीं यूरोपीय देशों में ज्ञान और शिल्प की देवी के रूप में मिनर्वा का स्मरण किया जाता है। प्राचीन ग्रीस में एथेंस की सरंक्षक देवी एथेना को ज्ञान,कला, प्रेरणा, न्याय,गणित की देवी माना जाता था। जापान की लोकप्रिय देवी बेंजाइतेन को हिंदू देवी सरस्वती का जापानी संस्करण कहा जा सकता है। इनके नाम पर जापान में कई मंदिर भी हैं। यद्यपि बसंत का प्रतीक रंग पीला माना जाता है लेकिन प्रकृति तो अपने आपको हर संभव रंगों में व्यक्त करती है। प्रायः हरे रंग से हमें एक ही रंग का बोध होता है लेकिन बस्तर के वनों में हमें इन दिनों हरे रंग के ही दर्जनों विभिन्न शेड देखने को मिल जायेंगे। पलाश,सेमल,अमलतास के फूलों को अगर हम जरा गौर से देखें तो उनमें लाल, गुलाबी, केसरिया रंगों में कितनी ही विभिन्नताएं दिखने लगेंगी। इन दिनों आप रायपुर से बस्तर की ओर चलें तो कांकेर पार करते ही सड़क के दोनों ओर दूर-दूर तक चटख लाल और दमकते केसरिया फूलों से आपादमस्तक लदे हुए पेड़ स्वागत करते नज़र आयेंगे। बीच-बीच में मानों इनसे होड़ लगाते हुए पूर्णतः पत्रविहीन केवल चमकदार लाल,गुलाबी फूलों से लदे-फंदे सेमल के विशालकाय पेड़ अपनी पृथक गरिमामय उपस्थिति दर्ज़ कराने को आतुर नज़र आते हैं। लंबे-पीले फूलों के गुच्छों से सुसज्जित अमलतास का तो कहना ही क्या, ऐसा लगता है मानो राजा-महाराजाओं के पूरे स्वर्ण खजाने को इसपर लुटा दिया गया हो। फूलों के पेड़ों की तो छोड़िए यहां सड़क के दोनों ओर कई ऐसे बेहद खूबसूरत पेड़ नज़र आयेंगे जिनमें यद्यपि फूल तो नहीं हैं लेकिन उनका गुलाबी, लाल, स्वर्णिम हरित रंग की नई पत्तियों का चमकीला लिबास कई बार फूलों से लदे पेड़ों की शोभा से टक्कर लेता प्रतीत होता है। पर क्या हमारे पास हमारे पास कुछ पल ठहर कर, इन दिनों अपने चारों ओर बिखरे हुए प्रकृति के इन बेशुमार रंगों के इस अपार सौंदर्य को देखने तथा निहारने का वक्त है? शायद नहीं...या बिल्कुल ही नहीं...!

साक्षात्कार

इतनी मानवीय ऊर्जा से भरी रचनाएं कि मॉरीशस की धरती से आते हुए भी शब्द-स्वर छीजता नहीं है

मॉरीशस में रहने वाले हिंदी के शीर्ष लेखक **रामदेव धुरंधर** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत

मॉरीशस के कारोलिन में 11 जून 1946 को जन्मे रामदेव धुरंधर का हिंदी के शीर्ष अप्रवासी लेखकों में यशस्वी व चर्चित नाम है। उनके पूर्वज उ.प्र. के देवरिया जनपद के रहे हैं। रामदेव धुरंधर को शब्द संघर्ष विरासत में मिला। बचपन में पिता से हिंदी का संस्कार मिला। मॉरीशस में बोली जाने वाली फ्रेंच और क्रिओल भाषा के बीच हिंदी का ज्ञान उन्होंने बाद में जैसे-तैसे अर्जित किया। बाद में हिंदी प्रचारिणी सभा से वह व्याकरण सम्मत हिंदी सीख पाए। उसके बाद तो वे साहित्यिक संस्थाओं में हिंदी लेखन के लिए प्रशिक्षण देने में वर्षों सक्रिय रहे। भारत से मॉरीशस आए भारतवंशियों की संघर्ष गाथा मुखरित करने वाले रामदेव धुरंधर के एक दर्जन से अधिक हिंदी कृतियां, उपन्यास, कहानी, लघु कथा संग्रह आदि प्रकाशित हो चुके हैं। स्थानीय रेडियो में सैकड़ों स्व लिखित एकांकी की प्रस्तुति। दूरदर्शन पर ध ारावाहिकों का प्रसारण। अनेक रचनाओं का फ्रेंच भाषा में अनुवाद उन्होंने किया है। मॉरीशस में अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित रामदेव धुरंधर को भारत में 2017 में श्रीलाल शुक्ल सम्मान के साथ विभिन्न संस्थाओं से समय-समय पर सम्मानित किया जाता रहा है। प्रस्तुत साक्षात्कार हाल ही में उनके दिल्ली प्रवास के दौरान लिया गया।

रामदेव धुरंधर

ई-मेलः rdhoorundhur@gmail.com

कुसुमलता सिंह

प्रबंध संपादक, ककसाड़

प्र. वह कौन सा दौर था जिस का प्रभाव आपके लेखन पर सब से अधिक पड़ा?

उ. आप के प्रश्नों के उत्तर करने से पहले एक विशेष बात का उल्लेख करना चाहूंगा। मेरी यह बात महत्वपूर्ण पत्रिका 'ककसाड़' के सम्मानित होने से संबंधित है। मैं दिल्ली में था जहां आप के बताने पर मुझे पता चला था'ककसाड़' को सम्मान प्राप्त होने वाला है। आपने मुझे जगह बताने के साथ कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया था। मैंने उपस्थिति देना अपना कर्तव्य माना था और निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचा था। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की ओर से भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की ओर से केंद्रीय संस्कृति मंत्री श्री महेश शर्मा के हाथों 'ककसाड़' सम्मानित हुआ। पचास हजार की नकद राशि और सम्मान पत्र प्राप्त होना इस बात का संकेत है कि हिंदी के उत्थान और विकास के लिए जो काम हो रहा है 'ककसाड़' में उस की वास्तविक प्रतिच्छवि देख कर उसे इतनी भव्यता से सम्मानित करने की रूपरेखा निश्चित की गयी थी। आप के कुशल संपादन की पहचान किसी परिचय का मोहताज नहीं है। आप का संपादन आप की निष्ठा का स्वयं परिचायक है। यह सम्मान इस बात को रेखांकित कर रहा है कि राजधानी दिल्ली एक खोजी निगाह भी रखती है और उस निगाह की ऊष्मा आप तक पहुंची। मेरी ओर से आप को इस विशिष्ट सम्मान के संदर्भ में हृदय से बधाई और 'ककसाड़' के दीर्घजीवी होने के लिए सादर शुभ कामनाएं। **-रामदेव धुरंधर**

प्र. अब आप के प्रथम प्रश्न पर आता हूं। आपने पूछा वह कौन सा दौर था जिस का प्रभाव मेरे लेखन पर सब से अधिक पड़ा?

उ. यह एक लंबी कहानी है। मॉरीशस में फ्रेंच का वर्चस्व होने से यही भाषा सब की जुबान पर बोलती है। इस दृष्टि से यहां हिंदी में लेखन करना और अपनी पुस्तकें प्रकाशित करवाना यह एक बहुत ही दुरूह कार्य होता है। मैं कह सकता हूं इस दुरूहता को मैंने आकंठ स्वीकार किया है और अच्छा परिणाम तलाश निकालने के लिए किसी भी प्रकार की जद्दोजहद से मुंह नहीं मोड़ा है। हिंदी लेखन की मेरी साधना का पहला पड़ाव वह है जब मैं गरीबी के दौर से गुजर रहा था। मैं अपनी किशोर उम्र में खेतों में मजदूरी करने के साथ यातना और शोषण का बहुत करीब से स्वयं भुक्तभोगी रहा। मैं ऐसा भी कह सकता हूं लिखने के लिए मेरे भीतर एक अजीब सा उत्स पैदा